हमारी बात

पिछले सप्ताह हमने एक नाटक देखा—कठपुतली। शुरुआत का गीत था—

औरत है या कठपुतली है
जननी है या करमजली है
कदम कदम पर ठोकर खाती
फिर भी सबके साथ चली है
किसके हाथों में है डोर
किसका चलता किस पर ज़ोर.....

गीत के इन शब्दों ने हमें सोचने को मजबूर कर दिया। कुछ सवाल हमारे दिमाग़ में उठे। क्या औरत अपनी हालत के लिए खुद भी ज़िम्मेदार नहीं है? क्या हमारे मन में भी सदियों से चली आ रही औरत की रूढ़िवादी छवि नहीं है? क्या हम स्वयं भी हीन-भावना की शिकार नहीं हैं? क्या ग़लत धारणाओं ने हमें जकड़ नहीं रखा है? क्या हम सचमुच आगे बढ़ना चाहती हैं?

यदि आपका उत्तर 'हां' में है तो आइए कुछ रचनात्मक क़दम उठाएं। सबसे ज़रूरी बात है हीन-भावना खत्म करना। जब तक इंसान के मन में हीन-भावना बनी रहती है वह आगे नहीं बढ़ सकता। हमारे देश सहित पूरे संसार में महिलाओं ने यह प्रमाणित कर दिया है कि समुचित अवसर मिलने पर वे पुरुषों से कम योग्य नहीं। स्त्री और पुरुष में कई कुदरती फ़र्क़ हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि पुरुष श्रेष्ठ है, स्त्री हीन है।

ग़लत सामाजिक धारणाओं को छोड़ने और सही धारणाओं को अपनाने में औरतें अहम् भूमिका निभा सकती हैं। औरत के शोषण का दर्द औरत से ज़्यादा कौन महसूस कर सकता है। जो सामाजिक परंपराएं औरत को कमज़ोर बनाती हैं और उसके शोषण में सहायक हैं उन्हें तोड़ना बहुत ज़रूरी है। सही जानकारी से बहुत सी ग़लत धारणाएं अपने आप खत्म हो जाती हैं। इसलिए ज़रूरी है कि औरतें आगे बढ़कर सही जानकारी हासिल करें।

एकसाथ बैठकर अपनी समस्याओं की चर्चा करें, अपने दु:ख-सुख बांटें। एकजुट होकर चुनौतियों का सामना करना आसान हो जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर महिला सम्मेलनों का आयोजन इसी उद्देश्य से किया जाता है। दिसंबर 1990 में ऐसा ही एक सम्मेलन कालीकट (दक्षिण भारत) में हुआ। उसमें हिस्सा लेकर आई उत्तर प्रदेश की एक बहन (रजत रानी) ने हमें एक गीत भेजा है जिसकी कुछ पंक्तियां हम अगले पृष्ठ पर दे रहे हैं: